INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.428 (SJIF 2026)

स्कूली शिक्षा में पठन विकास की चरणबद्ध प्रक्रियाओं का विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 के विशेष परिप्रेक्ष्य में विश्लेषणात्मक अध्ययन

(An Analytical Study of the Phased Processes of Reading Development in School Education with Special Reference to the National Curriculum Framework for School Education 2023)

Dr. Naresh Kumar
Assistant Professor,
State Council of Educational Research and Training,
Varun Marg, Defence Colony, New Delhi (India)
E-mail: nky2013@gmail.com

DOI No. 03.2021-11278686 DOI Link :: https://doi-ds.org/doilink/05.2026-71327822/IRJHIS2605004

सारांश :

शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना या तथ्यों के संप्रेषण तक सीमित नहीं है; अपितु इसका मूल लक्ष्य विद्यार्थियों में समझ, विश्लेषण, कल्पनाशीलता और आलोचनात्मक दृष्टिकोण को विकसित करना है। इस समग्र शैक्षिक प्रक्रिया में पठन कौशल की विशेष केंद्रीय भूमिका होती है। पठन वास्तव में केवल शब्दों को पढ़ने की प्रक्रिया नहीं; बल्कि यह विचारों को समझने, भावनाओं को आत्मसात करने और ज्ञान को संरचित करने की मानसिक योग्यता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 (NCFSE 2023) इस अवधारणा को पुष्ट करती हैं कि यदि शिक्षा को प्रभावशाली बनाना है तो पठन को विद्यालयी शिक्षा के केंद्र में स्थापित करना अनिवार्य है। प्रस्तुत शोधात्मक अध्ययन प्रसिद्ध शिक्षाविद् जे. एस. चाल (Chall, 1983) द्वारा प्रतिपादित पठन विकास के छह चरणों के आधार पर विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 में वर्णित स्कूली शिक्षा में पठन विकास की चरणबद्ध प्रक्रियाओं की विवेचना करता है। चाल के अनुसार पठन विकास एक निरंतर, क्रमिक एवं संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जो 'पूर्व-पठन' से आरंभ होकर 'दृष्टिकोण के निर्माण और पुनर्निर्माण' तक विस्तृत होती है। यह लेख प्रत्येक चरण- पूर्व-पठन, प्रारंभिक पठन, प्रवाहमयी पठन, नवीन ज्ञान के लिए पठन, विविध दृष्टिकोणों का पठन तथा दृष्टिकोण के निर्माण और पुनर्निर्माण का विस्तृत विश्लेषण करता है और उन्हें विद्यालयी स्तर (प्रारंभिक, मध्य, माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक) के अनुरूप संरेखित करता है।

प्रस्तुत शोधालेख में इस बात पर बल दिया गया है कि स्कूली शिक्षा के प्रत्येक चरण में छात्रों को उस पठन स्तर तक पहुँचाने की आवश्यकता है जो उनके संज्ञानात्मक और भाषिक विकास के लिए उपयुक्त हो। प्रारंभिक स्तर पर बच्चों में मौखिक भाषा, ध्वनि पहचान और मुद्रण जागरूकता को प्राथमिकता दी जानी चाहिए; वहीं माध्यमिक स्तर पर उन्हें बहुदृष्टिकोणीय विश्लेषण और आलोचनात्मक चिंतन की ओर अग्रसर किया जाना चाहिए। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर छात्र स्वतंत्र रूप से विचारों का निर्माण करते हैं, पठन को बौद्धिक विमर्श का माध्यम बनाते हैं और एक सक्रिय, विवेकी एवं जिम्मेदार नागरिक की भूमिका के लिए स्वयं को तैयार करते हैं। शोधालेख में यह भी विवेचना की गई है कि पठन विकास की प्रक्रिया में शिक्षक और पाठ्यपुस्तक लेखक दोनों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षक को पठन के प्रत्येक चरण की समझ होनी चाहिए और उसे यह भी ज्ञात होना चाहिए कि छात्रों को किस प्रकार की गतिविधियों, उदाहरणों और संदर्भों से जोड़कर पठन को अर्थपूर्ण बनाया जा सकता है। पाठ्यपुस्तक लेखक एवं सामग्री निर्माता को भाषा की सरलता, संदर्भिकता, विविधता और समावेशिता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। साथ ही गतिविधि आधारित शिक्षण, दृश्य-सामग्री का उपयोग, उच्च स्तरीय सोच कौशल आधारित प्रश्न और संवादात्मक लेखन जैसे शैक्षिक उपायों के माध्यम से पठन को एक रचनात्मक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। अंततः, यह अध्ययन रेखांकित करता है कि यदि पठन को एक सोचने-समझने और सृजनात्मकता विकसित करने की प्रक्रिया के रूप में देखा जाए तथा उसे विद्यालयी शिक्षा की संरचना में सशक्त रूप से समाहित किया जाए तो न केवल छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियाँ बढ़ सकती हैं; बल्कि वे आजीवन शिक्षार्थी, स्वतंत्र विचारक और उत्तरदायी नागरिक भी बन सकते हैं।

मुख्य शब्द : विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पठन विकास, पूर्व-पठन, प्रारंभिक पठन, प्रवाहमयी पठन, गतिविधि आधारित शिक्षण

प्रस्तावना :

शिक्षा का उद्देश्य केवल तथ्यों और सूचनाओं का संप्रेषण भर नहीं है; अपितु यह एक ऐसी व्यापक प्रक्रिया है जो बच्चों के समग्र विकास की आधारशिला रखती है। एक उत्तरदायी और प्रभावशाली शिक्षा प्रणाली का लक्ष्य होता है बच्चों में समझ, विवेक, कल्पनाशीलता, तर्कशक्ति और आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित करना। इस समग्र विकास के केंद्र में है-पठन। पठन केवल शब्दों और वाक्यों को पढ़ने की प्रक्रिया नहीं है; अपितु यह अनुभवों को आत्मसात करने, विचारों को समझने और नई अवधारणाओं को ग्रहण करने की मानसिक क्षमता का निर्माण करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और इसके आधार पर तैयार की गई विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 (NCFSE 2023) इस तथ्य को स्वीकार करती है कि पठन कौशल विद्यालयी शिक्षा की रीढ़ है। इस दस्तावेज़ में यह स्पष्ट किया गया है कि यदि विद्यार्थियों को शिक्षा में सफलता प्राप्त करनी है तो उन्हें पठन के विभिन्न स्तरों पर दक्ष बनाना अति आवश्यक है। आज की शिक्षा व्यवस्था में लगभग सभी शिक्षण सामग्री चाहे वे पाठ्यपुस्तकें हों, कार्यपत्रक हों या डिजिटल माध्यमों में प्रस्तुत सामग्री हो प्रिंट अथवा लिखित रूप में उपलब्ध होती है। ऐसे में विद्यार्थियों के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वे उस सामग्री को न केवल पढ़ सकें; बल्कि उसे समझें, उस पर विचार करें और उपयुक्त संदर्भों में उसका उपयोग भी कर सकें।

शिक्षा को प्रभावशाली और उपयोगी बनाने के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि पठन विकास को क्रमिक और वैज्ञानिक ढंग से समझा जाए। इस दिशा में प्रसिद्ध शिक्षाविद् जे. एस. चाल (Chall, J.S. 1983) का शोध अत्यंत उल्लेखनीय है जिन्होंने पठन विकास को छह स्पष्ट चरणों में विभाजित किया है। उनके अनुसार पठन एक सतत प्रक्रिया है जो प्रारंभिक भाषा अनुभव से शुरू होकर वैचारिक निर्माण और पुनर्निर्माण तक पहुँचती है। इस शोधालेख में हम चाल द्वारा प्रस्तावित इन छह पठन-चरणों का विश्लेषण करेंगे और यह समझने का प्रयास करेंगे कि विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 इन चरणों को किस प्रकार विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों (प्रारंभिक, मध्य, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक) में सुव्यवस्थित रूप से समाहित करती है।

पठन विकास का महत्व :

पठन विकास भाषा अर्जन की प्रक्रिया का एक अत्यंत आवश्यक एवं केंद्रीय घटक है। यह केवल शब्दों को पहचानने या वाक्य पढ़ने की यांत्रिक क्षमता नहीं है; अपितु यह समझने, सोचने, कल्पना करने और विचारों को आत्मसात करने की संज्ञानात्मक प्रक्रिया है। जब कोई बच्चा पढ़ना सीखता है तो वह अक्षरों और शब्दों की पहचान करने से आगे बढ़कर उनके अर्थों को समझने, उनके भावनात्मक और वैचारिक पक्षों को ग्रहण करने और उन्हें अपने अनुभवों से जोड़ने की दिशा में आगे बढ़ता है। पठन वह माध्यम है जिसके द्वारा छात्र न केवल भाषा में दक्षता प्राप्त करते हैं; बल्कि विभिन्न विषयों के ज्ञान, सामाजिक व्यवहार, नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक परंपराओं को भी आत्मसात करते हैं। एक सक्षम पाठक विचारों को विश्लेषित कर सकता है, तर्क कर सकता है और दूसरों के दृष्टिकोण को समझते हुए अपने मत का विकास कर सकता है। इसीलिए पठन को एक माध्यम के रूप में नहीं; अपितु एक सोचने-समझने की प्रक्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 दोनों इस तथ्य को भली-भांति स्वीकार करते हैं कि बच्चों में पठन कौशल का विकास केवल भाषा शिक्षा तक सीमित नहीं है; बल्कि यह उनके समग्र शैक्षिक और व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक है। इन दस्तावेज़ों में यह विशेष रूप से उल्लेख किया गया है कि बच्चों को ऐसी शैक्षिक परिस्थितियाँ और अवसर प्रदान किए जाएँ जिनसे वे धीरे-धीरे स्वावलंबी पाठक बनें और स्वयं से सीखने की क्षमता विकसित करें। आज की जटिल और जानकारी-प्रधान

दुनिया में जहाँ हर क्षण नई सूचनाएँ प्राप्त हो रही हैं वहाँ एक स्वतंत्र और आजीवन शिक्षार्थी बनने के लिए सशक्त पठन कौशल का होना अनिवार्य है। इसीलिए विद्यालयों और शिक्षकों को चाहिए कि वे पठन विकास को शिक्षा की प्राथमिकताओं में सम्मिलित करें और विद्यार्थियों को पठन का आनंद, उपयोगिता और शक्ति तीनों का अनुभव कराएँ।

स्कूली शिक्षा में पठन विकास के चरण :

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 में स्कूली शिक्षा के संदर्भ में पठन विकास से संबंधित निम्नलिखित चरणों का उल्लेख किया गया है-

चरण 1: पूर्व-पठन (Pre-reading) :

पूर्व-पठन पठन विकास की वह प्रारंभिक अवस्था है जब बच्चा औपचारिक रूप से पढ़ना नहीं जानता परंतु भाषा के संपर्क में आता है और उसकी मौखिक समझ का निर्माण प्रारंभ हो जाता है। यह चरण जन्म से ही सक्रिय हो जाता है जहाँ बच्चा अपने परिवेश के शब्दों, ध्वनियों, बोलचाल और संकेतों को सुनता, देखता और ग्रहण करता है। इस अवस्था में बच्चों में भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न होती है और वे धीरे-धीरे ध्वनियों और शब्दों को पहचानने लगते हैं। इस चरण में बच्चों के मौखिक भाषा कौशल; जैसे- सुनना, बोलना, शब्दावली और उच्चारण का विकास अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। यही कौशल आगे चलकर पठन की आधारशिला बनते हैं। यदि इस अवस्था में बच्चों को समृद्ध भाषा-संपन्न वातावरण, कहानियों, कविताओं, लयात्मक गीतों और संवादों से अवगत कराया जाए तो उनका भाषा और पठन से भावनात्मक जुड़ाव गहराता है। पूर्व-पठन चरण में बच्चों को मुद्रित सामग्री के प्रति भी सजग बनाना आवश्यक है। जब बच्चे यह देखना शुरू करते हैं कि वयस्क पुस्तकें पढ़ रहे हैं तो वे भी पुस्तक को एक अर्थपूर्ण वस्तु के रूप में देखना सीखते हैं। चित्रों को देखना, पन्ने पलटना, अक्षरों को निहारना आदि ये सब मुद्रण की अवधारणा को विकसित करते हैं। इस अवधारणा को 'प्रिंट अवेयरनेस' कहा जाता है।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 इस चरण को अत्यंत महत्वपूर्ण मानती है और विशेष रूप से इस बात पर बल देती है कि प्रारंभिक वर्षों में बच्चों को समृद्ध भाषिक अनुभव दिए जाएँ। इस चरण में रोचक गतिविधियों, संवाद आधारित शिक्षण, कहानी वाचन, कविता पाठ और दृश्य-सामग्री का प्रयोग बच्चों की भाषिक बुनियाद को मजबूत करता है। इस प्रकार पूर्व-पठन चरण न केवल पठन की तैयारी है; अपितु बच्चे को भाषा की दुनिया में प्रवेश कराने का एक मुख्य द्वार भी है जहाँ से वह सोचने, समझने और अभिव्यक्त करने की यात्रा प्रारंभ करता है।

चरण 2: प्रारंभिक पठन (Initial Reading / Decoding) :

पूर्व-पठन के पश्चात जब बच्चा औपचारिक रूप से अक्षरों और शब्दों को पढ़ना सीखता है तब वह प्रारंभिक पठन या 'डिकोडिंग' के चरण में प्रवेश करता है। इस अवस्था अथवा चरण में बच्चा मौखिक ध्वनियों (sounds) और लिखित प्रतीकों (letters) के बीच संबंध स्थापित करना सीखता है। इसे डिकोडिंग कहा जाता है क्योंकि बच्चा पहली बार भाषा की दृश्य इकाइयों (letters/words) को ध्वन्यात्मक रूप में रूपांतरित कर अर्थ ग्रहण करता है। इस चरण में बच्चे वर्णमाला की पहचान करते हैं, अक्षर-ध्वनि मेल (letter-sound correspondence) को समझते हैं और छोटे-छोटे शब्दों को पढ़ना आरंभ करते हैं। जैसे-जैसे यह समझ विकसित होती है बच्चा परिचित और अपरिचित दोनों शब्दों को डिकोड करना सीखता है। यह प्रक्रिया उसके मस्तिष्क को भाषा की ध्वनि और दृश्य इकाइयों को जोड़ने में समर्थ बनाती है। प्रारंभिक पठन में शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। उन्हें बच्चों को बार-बार उच्चारित शब्दों से परिचित कराना होता है जिनमें तुक, लय और पुनरावृत्ति हो। साथ ही चित्रों और संकेतों के माध्यम से बच्चों की समझ को मजबूत करना होता है। इस चरण

में 'फोनेमिक अवेयरनेस' (ध्वनि-संवेदनशीलता) और 'फॉनिक्स' (ध्वनि और अक्षर के संबंध की विधि) पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 इस चरण को प्राथमिक कक्षाओं (कक्षा 1 से 2) का मूलभूत उद्देश्य मानती है। यह रूपरेखा शिक्षकों को प्रोत्साहित करती है कि वे बच्चों को ध्वनियों, अक्षरों, शब्दों और वाक्यों की संरचना को रोचक गतिविधियों, खेलों, कविता-पाठ और कहानी-वाचन के माध्यम से समझाएं। यह चरण बच्चों को पठन की दुनिया में प्रवेश कराता है जहाँ वे आत्मविश्वास के साथ शब्दों को पढ़ना शुरू करते हैं। डिकोडिंग के साथ-साथ उनका शब्दज्ञान, ध्यान क्षमता और आत्म-अभिव्यक्ति का कौशल भी विकसित होता है जो आगे चलकर पठन प्रवाह की ओर ले जाता है।

चरण 3: प्रवाहमयी पठन (Fluency and Ungluing from Print) :

प्रारंभिक पठन के बाद जब बच्चा अक्षरों और शब्दों को पहचानने और पढ़ने में दक्ष हो जाता है तो वह पठन विकास के तीसरे चरण में प्रवेश करता है जिसे प्रवाहमयी पठन कहा जाता है। इस अवस्था में बच्चा अब प्रत्येक अक्षर या शब्द को पढ़ने में मानसिक श्रम नहीं करता; अपितु वह सहज, सुगम और सजीव रूप में पठन करने लगता है। इसे ही 'Ungluing from Print' कहा जाता है अर्थात् अब उसकी चेतना केवल शब्दों की ओर चिपकी नहीं रहती; बल्कि वह पढ़े गए शब्दों के अर्थ पर भी केंद्रित हो पाता है। इस चरण की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि डिकोडिंग की प्रक्रिया स्वचालित हो जाती है। बच्चा अब शब्दों को पहचानने में समय नहीं लगाता जिससे उसका मस्तिष्क पाठ की समझ और भावार्थ पर केंद्रित होता है। यही वह अवस्था है जहाँ पढ़ने का असली आनंद और समझ विकसित होती है। इस स्तर पर बच्चों को ऐसे पाठ देने चाहिए जिनमें वे अपनी रुचि, अनुभव और कल्पना से जुड़ाव महसूस करें। दोहराव वाले वाक्य, सरल भाषा, कहानी की गति और स्वर की विविधता पठन प्रवाह को बेहतर बनाते हैं। शिक्षक द्वारा वाचन का नमूना प्रस्तुत करना, समूह में वाचन गतिविधियाँ कराना और बच्चों को आत्मपाठ (self-reading) के लिए प्रेरित करना इस चरण में सहायक होता है।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 के अनुसार विद्यार्थियों को कक्षा 3 तक इस चरण तक पहुँचाना चाहिए। यदि बच्चे इस स्तर पर सफलतापूर्वक पहुँचते हैं तो आगे की शिक्षा में वे न केवल नए ज्ञान का अधिग्रहण कर सकते हैं; बल्कि स्वावलंबी शिक्षार्थी भी बन सकते हैं। प्रवाहमयी पठन केवल भाषा में दक्षता नहीं लाता; बल्कि यह सोचने, प्रश्न करने, कल्पना करने और विचारशील बनने की दिशा में भी पहला निर्णायक कदम होता है।

चरण 4: नवीन ज्ञान के लिए पठन (Reading for Learning the New) :

जब बच्चा प्रवाहमयी पठन की अवस्था में पहुँच जाता है तब वह केवल पढ़ने की प्रक्रिया में नहीं उलझा रहता; बल्कि पठन के माध्यम से नए विचारों, अवधारणाओं और ज्ञान को आत्मसात करना शुरू करता है। यही अवस्था चरण 4: नवीन ज्ञान के लिए पठन की है। इस स्तर पर बच्चा पाठ को केवल जानकारी के रूप में नहीं पढ़ता; बल्कि उसमें छिपे अर्थ, संदर्भ, संबंध और प्रयोगशीलता को भी समझने लगता है। इस चरण की यह विशेषता है कि बच्चा अब केवल उन विषयों तक सीमित नहीं रहता जिनका वह प्रत्यक्ष अनुभव कर चुका है; बल्कि अब वह उन विषयों, स्थानों, घटनाओं और पात्रों के बारे में भी जानने लगता है जो उसकी अपनी दुनिया से बाहर हैं। इस प्रकार उसका पठन अब कल्पना, तर्क और विश्लेषण के स्तर पर विकसित होता है। इस अवस्था में विद्यार्थियों को सूचनात्मक लेख, जीवनी, विज्ञान, इतिहास, सामाजिक मुद्दों आदि विषयों से परिचय कराना चाहिए। यहाँ केवल साहित्य नहीं; बल्कि विविध प्रकार की पाठ्यवस्त; जैसे-समाचार, आलेख, तथ्यात्मक रचनाएँ और संवादात्मक सामग्री भी सम्मिलित होनी चाहिए ताकि बच्चा विषयगत विविधता के साथ पाठ का विश्लेषण कर सके।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 के अनुसार यह चरण मध्य स्तर (कक्षा 4 से 8) तक छात्रों में विकसित होना चाहिए। रूपरेखा यह स्पष्ट करती है कि विद्यार्थियों को केवल भाषा शिक्षण तक सीमित न रखा जाए; अपितु भाषा को एक उपकरण के रूप में प्रयोग करते हुए अन्य विषयों के ज्ञान अर्जन की क्षमता का निर्माण किया जाए। इस चरण में विकसित पठन कौशल विद्यार्थियों को स्वतंत्र शिक्षार्थी बनने की दिशा में अग्रसर करता है। वे अपने प्रश्नों के उत्तर स्वयं खोजने में रुचि लेने लगते हैं एवं पठन को ज्ञान, तर्क और अभिव्यक्ति का माध्यम बना लेते हैं।

चरण 5: विविध दृष्टिकोणों का पठन (Multiple Viewpoints) :

जब छात्र नवीन विषयवस्तु के पठन और उसके अर्थग्रहण में दक्ष हो जाते हैं तब वे पठन की उस अवस्था में पहुँचते हैं जहाँ वे पाठ को केवल जानकारी के स्रोत के रूप में नहीं; बल्कि विचार, दृष्टिकोण और विमर्श के रूप में देखना शुरू करते हैं। यही चरण 5 है जिसे "विविध दृष्टिकोणों का पठन" नाम से जाना जाता है। इस चरण में छात्र यह समझने लगते हैं कि किसी भी पाठ या लेखन के पीछे लेखक की अपनी सोच, भावना और दृष्टिकोण होता है। वे यह भी महसूस करते हैं कि लेखक का दृष्टिकोण अंतिम नहीं है; बल्कि एक संभावित दृष्टिकोण मात्र है और इसके समानांतर अन्य दृष्टिकोण भी मौजूद हो सकते हैं। यह समझ उन्हें आलोचनात्मक सोच और सजग पाठक बनने की दिशा में आगे बढ़ाती है। उदाहरणस्वरूप- यदि विद्यार्थी किसी ऐतिहासिक घटना पर दो अलग-अलग लेखकों की टिप्पणियाँ पढ़ते हैं तो वे यह विश्लेषण कर सकते हैं कि दोनों लेखकों ने अलग-अलग तथ्यों, भावनाओं और मूल्यांकन के आधार पर अपने मत व्यक्त किए हैं। विद्यार्थी अब पाठ से सहमत या असहमत होने की क्षमता रखते हैं और अपने स्वतंत्र विचारों का निर्माण करते हैं। इस स्तर पर शिक्षकों को चाहिए कि वे विद्यार्थियों को बहुपरिप्रेक्ष्य पाठ, संवादात्मक लेख, निबंध, व्यंग्य, संपादकीय आदि से अवगत कराएँ एवं उन्हें चर्चा, तर्क और तुलना जैसे अभ्यासों में भी सम्मिलित करें।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 के अनुसार यह पठन स्तर विद्यार्थियों में माध्यमिक चरण (कक्षा 9-10) तक विकसित किया जाना चाहिए। यह चरण उन्हें पाठ्यवस्तु के गहराई से अध्ययन के लिए तैयार करता है और उन्हें विचारशील, विवेकी एवं उत्तरदायी नागरिक बनने में सहायता करता है। इस प्रकार यह चरण पठन को ज्ञान से विमर्श की ओर ले जाता है जहाँ छात्र किसी पाठ को एक सजीव, बहुआयामी और गतिशील संवाद के रूप में देखना शुरू करते हैं।

चरण 6: दृष्टिकोण का निर्माण और पुनर्निर्माण (Construction and Reconstruction) :

पठन विकास की यह अंतिम और सर्वोच्च अवस्था है जहाँ छात्र केवल पढ़े गए विचारों को ग्रहण करने तक ही सीमित नहीं रहते; अपितु वे उन विचारों के आलोक में अपने दृष्टिकोण का निर्माण और पुनर्निर्माण करते हैं। इस अवस्था में पाठक न केवल लेखक के प्रसंग, संदर्भ एवं मजमून आदि को पहचानता है; बल्कि वह तार्किक सहमति या असहमति के साथ अपने अनुभवों और ज्ञान के आधार पर नवीन वैचारिक संरचना तैयार करता है। इस चरण की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि पाठक अब पठन को सृजनात्मक प्रक्रिया के रूप में अपनाता है। वह स्वयं चयन करता है कि उसे क्या पढ़ना है, क्यों पढ़ना है और उस पठन से क्या नया सीखना या समझना है। वह विभिन्न स्रोतों से प्राप्त जानकारी को मिलाकर एक समेकित और परिपक्व दृष्टिकोण विकसित करता है जो या तो उसकी पूर्वधारणाओं की पुष्टि करता है या उन्हें चुनौती देकर नए विचारों को जन्म देता है। इस अवस्था में विद्यार्थी साहित्य, दर्शन, समाजशास्त्र, विज्ञान आदि विषयों की जटिल और बहुविध पाठ्य सामग्री से संवाद करते हैं। वे आलोचनात्मक समीक्षा, स्वतंत्र निबंध लेखन, विमर्शात्मक प्रस्तुति और बहु-स्रोत पाठों का तुलनात्मक अध्ययन करते हैं।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 के अनुसार यह स्तर विद्यार्थियों में उच्चतर माध्यमिक स्तर (कक्षा 11-12) तक पहुँचाना अपेक्षित है। यह उन्हें न केवल विश्वविद्यालयीन अध्ययन के लिए तैयार करता है बल्कि उन्हें आजीवन शिक्षार्थी, स्वतंत्र विचारक और लोकतांत्रिक समाज के उत्तरदायी सदस्य बनने में भी सक्षम बनाता है। यह चरण दर्शाता है कि शिक्षा का अंतिम उद्देश्य केवल ज्ञान संचय नहीं; अपितु ज्ञान का विवेकपूर्ण प्रयोग, रचनात्मकता और वैचारिक स्वतंत्रता है। जब छात्र इस स्तर तक पहुँचते हैं तब वे पठन को केवल शब्दों का समूह नहीं; बल्कि स्वयं की चेतना और सोच के विकास का माध्यम मानने लगते हैं।

पठन विकास और विद्यालयी चरणों का संरेखण

विद्यालयी चरण	लक्षित पठन स्तर
प्रारंभिक स्तर (कक्षा 1-3)	चरण 1 से 3 (पूर्व-पठन से प्रवाहमयी पठन तक)
मध्य स्तर (कक्षा 4-8)	चरण 4 (नवीन ज्ञान के लिए पठन)
माध्यमिक स्तर (9-10)	चरण 5 (विविध दृष्टिकोणों का पठन)
उच्चतर माध्यमिक (11-12)	चरण 6 (दृष्टिकोण का निर्माण और पुनर्निर्माण)

पठन विकास की प्रक्रिया में शिक्षक और पाठ्यपुस्तक लेखकों की भूमिका :

विद्यालयी शिक्षा में पठन कौशल का विकास केवल भाषा शिक्षकों की जिम्मेदारी नहीं है; अपितु यह हर शिक्षक, पाठ्यपुस्तक लेखक और पाठ्य सामग्री निर्माता की सामूहिक भूमिका है। पठन केवल भाषा सीखने का माध्यम नहीं; बल्कि यह हर विषय; जैसे- गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला और यहाँ तक कि खेल के अधिग्रहण और आत्मसात करने का आधार है। इसीलिए पठन विकास को एक समग्र शैक्षिक प्रक्रिया के रूप में देखना और उसके सभी घटकों को सक्रिय रूप से इससे जोड़ना आवश्यक है। इस संदर्भ में शिक्षक और पाठ्यपुस्तक लेखकों की भूमिका को निम्न प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है-

शिक्षक की भूमिका :

पठन विकास बच्चों के समग्र अधिगम की आधारशिला है। यह केवल अक्षरों को पहचानने या शब्दों को पढ़ लेने की प्रक्रिया नहीं है; अपितु अर्थ समझने, विचार करने, विश्लेषण करने और अभिव्यक्ति करने की क्षमता का विकास भी है। इस पूरी प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। एक संवेदनशील और जागरूक शिक्षक बच्चों के पठन कौशल को क्रमबद्ध रूप से विकसित करते हुए उन्हें सक्रिय और स्वतंत्र पाठक बना सकता है। पठन विकास की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है-

क. **पठन स्तर की समझ** - एक प्रभावी शिक्षक को पठन विकास के विभिन्न चरणों की स्पष्ट समझ होनी चाहिए। प्रत्येक बच्चा अपनी गति और क्षमता के अनुसार पढ़ना सीखता है। कुछ बच्चे अक्षर पहचान के स्तर पर होते हैं, कुछ शब्दों को जोड़कर पढ़ना सीख रहे होते हैं; जबकि कुछ बच्चे प्रवाहमयी पठन और अर्थ ग्रहण की क्षमता विकसित कर चुके होते हैं। ऐसे में शिक्षक का दायित्व है कि वह प्रत्येक विद्यार्थी के पठन स्तर का अवलोकन करे और उसी के अनुसार शिक्षण योजना बनाए। यदि कोई बच्चा डिकोडिंग के स्तर पर है तो उसे ध्वनि-अक्षर संबंध, शब्द निर्माण और दोहराव अभ्यास की आवश्यकता होगी; जबकि प्रवाहमयी पाठक को समझ-आधारित गतिविधियों और विश्लेषणात्मक प्रश्नों से आगे बढ़ाया जा सकता है। इस प्रकार शिक्षक द्वारा स्तरानुसार सहायता प्रदान करने से सभी बच्चों का पठन विकास सुनिश्चित किया जा सकता है।

ख. **भिन्न पृष्ठभूमियों का ध्यान** - बच्चों की भाषा, सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश, पारिवारिक वातावरण और पूर्व अनुभव पठन क्षमता

को गहराई से प्रभावित करते हैं। इसलिए शिक्षक को यह समझना आवश्यक है कि सभी बच्चे एक समान संदर्भों से नहीं आते। किसी बच्चे की मातृभाषा विद्यालय की भाषा से भिन्न हो सकती है, किसी का अनुभव ग्रामीण जीवन से जुड़ा हो सकता है; जबकि कोई शहरी वातावरण से परिचित होता है। ऐसी स्थिति में शिक्षक को शिक्षण सामग्री और उदाहरणों को बच्चों के अनुभवों से जोड़कर प्रस्तुत करना चाहिए। यदि पाठ में खेत, बाजार या परिवहन जैसे विषय हों तो शिक्षक बच्चों से उनके व्यक्तिगत अनुभव साझा करवाए। इससे बच्चों को पाठ को समझने में आसानी होती है और पठन अर्थपूर्ण बनता है। विविध पृष्ठभूमियों को स्वीकार करने से कक्षा अधिक समावेशी बनती है और सभी बच्चों को सीखने का समान अवसर मिलता है।

ग. **गतिविधि और सहभागिता आधारित शिक्षण -** पठन को रोचक और प्रभावी बनाने के लिए शिक्षक को गतिविधि आधारित शिक्षण अपनाना चाहिए। केवल पाठ पढ़वाना पर्याप्त नहीं होता; बच्चों को पढ़े गए पाठ से जुड़ी विभिन्न गतिविधियों में शामिल करना आवश्यक है। उदाहरण के लिए कहानी लेखन, संवाद लेखन, भूमिका अभिनय (Role Play), चित्र वर्णन, समूह चर्चा, शब्द खेल और अनुच्छेद पुनर्गठन जैसी गतिविधियाँ बच्चों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करती हैं। जब बच्चे स्वयं पढ़ते हैं, चर्चा करते हैं और अपने विचार व्यक्त करते हैं तो उनका पठन कौशल स्वाभाविक रूप से विकसित होता है। ऐसी गतिविधियाँ बच्चों में रुचि बढ़ाती हैं और उन्हें सीखने की प्रक्रिया का सक्रिय सहभागी बनाती हैं।

घ. **स्वतंत्र और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा -** पठन विकास का अंतिम उद्देश्य केवल पाठ को समझना नहीं; बल्कि उस पर विचार करना और अपने निष्कर्ष निकालना है। शिक्षक को बच्चों को इस दिशा में प्रेरित करना चाहिए कि वे पढ़े गए पाठ पर प्रश्न करें, तर्क प्रस्तुत करें और विभिन्न दृष्टिकोणों से सोचें। उदाहरण के लिए शिक्षक बच्चों से पूछ सकता है कि कहानी का अंत अलग कैसे हो सकता था, पात्र का निर्णय सही था या नहीं या वे स्वयं उस स्थिति में क्या करते। इस प्रकार के प्रश्न बच्चों में विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक सोच विकसित करते हैं। जब बच्चे अपने विचार व्यक्त करना सीखते हैं तो वे आत्मविश्वासी पाठक बनते हैं और समाज में जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित होते हैं।

इस प्रकार पठन विकास की प्रक्रिया में शिक्षक मार्गदर्शक, सहायक और प्रेरक की भूमिका निभाता है। उसकी संवेदनशीलता, योजना और सहभागिता आधारित दृष्टिकोण बच्चों को सक्षम, आत्मविश्वासी और विचारशील पाठक बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

पाठ्यपुस्तक लेखकों और सामग्री निर्माताओं की भूमिका :

पठन विकास की प्रक्रिया केवल कक्षा में शिक्षक के प्रयासों पर निर्भर नहीं करती; अपितु पाठ्यपुस्तक लेखकों और सामग्री निर्माताओं की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण होती है। पाठ्यपुस्तक बच्चों के लिए सीखने का प्रमुख साधन होती है इसलिए उसकी भाषा, संरचना, विषय-वस्तु और गतिविधियाँ बच्चों के पठन कौशल के विकास को सीधे प्रभावित करती हैं। यदि पाठ्यसामग्री आयु, स्तर और संदर्भ के अनुरूप हो तो बच्चे सहज रूप से पढ़ना सीखते हैं, अर्थ ग्रहण करते हैं और पढ़ने में रुचि विकसित करते हैं। पठन विकास की प्रक्रिया में पाठ्यपुस्तक लेखकों और सामग्री निर्माताओं की भूमिका को निम्न प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है-

क. **आयु और स्तरानुकूल सामग्री का निर्माण -** पाठ्यपुस्तक लेखकों को यह स्पष्ट समझ होनी चाहिए कि वे किस कक्षा और किस आयु वर्ग के बच्चों के लिए सामग्री तैयार कर रहे हैं। प्रारंभिक कक्षाओं के बच्चों के लिए छोटे वाक्य, सरल शब्द और चित्रों के साथ प्रस्तुत सामग्री अधिक उपयुक्त होती है; जबकि उच्च कक्षाओं में जटिल विचारों, विविध अनुच्छेदों और विस्तृत पाठों को शामिल किया जा सकता है। यदि सामग्री बहुत कठिन होगी तो बच्चे पढ़ने में हतोत्साहित होंगे और पठन के प्रति रुचि कम हो जाएगी। दूसरी

ओर, यदि सामग्री अत्यधिक सरल होगी तो बच्चों की संज्ञानात्मक क्षमताओं को चुनौती नहीं मिलेगी और उनका विकास सीमित रह जाएगा। इसलिए पाठ्यसामग्री को क्रमिक रूप से बढ़ती कठिनाई के सिद्धांत पर आधारित होना चाहिए जिससे बच्चों का पठन कौशल धीरे-धीरे विकसित होता रहे।

ख. **भाषा का सरलीकरण और संदर्भिकता** - पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त भाषा सरल, सहज और बच्चों के अनुभवों से जुड़ी होनी चाहिए। अत्यधिक जटिल शब्दावली या लंबे वाक्य बच्चों के लिए पठन को कठिन बना सकते हैं। इसके स्थान पर छोटे वाक्य, परिचित शब्द और स्पष्ट अभिव्यक्ति का उपयोग पठन को अधिक सुगम बनाता है। साथ ही पाठों में स्थानीयता, सांस्कृतिक विविधता और वास्तविक जीवन के अनुभवों को शामिल करना आवश्यक है। उदाहरण के लिए- बच्चों के दैनिक जीवन से जुड़े विषय; जैसे- परिवार, विद्यालय, खेल, त्योहार, प्रकृति या समुदाय पाठ को अधिक अर्थपूर्ण बनाते हैं। जब बच्चा अपने अनुभवों से जुड़े संदर्भ पढ़ता है तो वह पाठ को बेहतर ढंग से समझ पाता है और पठन प्रक्रिया अधिक प्रभावी बनती है।

ग. **विविधता और समावेशिता** - समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए पाठ्यपुस्तकों में विविधता का समुचित प्रतिनिधित्व होना चाहिए। विभिन्न लिंग, सामाजिक वर्ग, भाषा, क्षेत्र और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों से जुड़े पात्रों और प्रसंगों को शामिल करने से प्रत्येक बच्चा स्वयं को पाठ में प्रतिबिंबित होते हुए देख सकता है। इससे बच्चों में आत्मीयता की भावना विकसित होती है और वे पाठ के साथ जुड़ाव महसूस करते हैं। साथ ही यह दृष्टिकोण बच्चों में सामाजिक-सांस्कृतिक समझ को भी विस्तारित करता है। विविधता पर आधारित सामग्री बच्चों को विभिन्न जीवन अनुभवों से परिचित कराती है और उनमें सहानुभूति, सम्मान तथा स्वीकार्यता जैसे मूल्यों का विकास करती है।

घ. **कल्पना और संवेदना का स्थान** - बच्चों के पठन विकास में कल्पनाशील और संवेदनात्मक सामग्री का विशेष महत्व होता है। पाठ्यपुस्तकों में कहानियाँ, कविताएँ, संवाद, चित्र और साहित्यिक अंश बच्चों की कल्पना शक्ति को विकसित करते हैं। जब पाठ में भावनात्मक तत्व, रोचक कथानक और जीवन्त चित्रण होता है तो बच्चे पढ़ने में अधिक रुचि लेते हैं। ऐसी सामग्री बच्चों को केवल पढ़ने तक सीमित नहीं रखती; बल्कि उन्हें सोचने, महसूस करने और कल्पना करने के लिए प्रेरित करती है। इससे उनके भावनात्मक विकास के साथ-साथ भाषा और अभिव्यक्ति कौशल का भी विस्तार होता है।

ङ. **उच्च सोच कौशल (HOTS) का समावेश** - पठन विकास के लिए यह आवश्यक है कि पाठ के अंत में दिए गए प्रश्न और गतिविधियाँ केवल स्मरण-आधारित न हों; अपितु उच्च सोच कौशल को बढ़ावा देने वाली हों। विश्लेषण, तुलना, तर्क, मूल्यांकन और कल्पना आधारित प्रश्न बच्चों को पाठ से आगे सोचने के लिए प्रेरित करते हैं। उदाहरण के लिए- "यदि आप कहानी के पात्र होते तो क्या करते?", "दो पात्रों की तुलना कीजिए" या "कहानी का नया अंत लिखिए" जैसे प्रश्न बच्चों की चिंतन क्षमता को विकसित करते हैं। इस प्रकार की गतिविधियाँ बच्चों को सक्रिय पाठक बनाती हैं और उन्हें पाठ की गहराई से समझ विकसित करने में सहायता करती हैं।

इस प्रकार पाठ्यपुस्तक लेखक और सामग्री निर्माता पठन विकास की प्रक्रिया में आधारभूत भूमिका निभाते हैं। उनकी संवेदनशीलता, समावेशी दृष्टिकोण और स्तरानुकूल सामग्री बच्चों को रुचिकर, अर्थपूर्ण और चिंतनशील पठन अनुभव प्रदान करती है जो उन्हें आजीवन सीखने की दिशा में अग्रसर एवं प्रेरित करती है।

प्रभावी पठन शिक्षण हेतु आवश्यक घटक :

पठन शिक्षण बच्चों के भाषा विकास का एक महत्वपूर्ण आधार है। यह केवल शब्दों को पढ़ने की क्षमता विकसित करने तक सीमित नहीं है; बल्कि अर्थ ग्रहण, चिंतन, विश्लेषण और अभिव्यक्ति की क्षमता को भी विकसित करता है। प्रभावी पठन शिक्षण के लिए आवश्यक है कि कक्षा में ऐसे घटकों को शामिल किया जाए जो बच्चों को सक्रिय रूप से सीखने की प्रक्रिया में सहभागी बनाएं। जब पठन शिक्षण गतिविधिपरक, संदर्भ आधारित और चिंतनशील होता है तब बच्चे पढ़ने को एक अर्थपूर्ण अनुभव के रूप में ग्रहण करते हैं। प्रभावी पठन शिक्षण हेतु कुछ आवश्यक घटक निम्न प्रकार हैं -

1. **गतिविधि आधारित शिक्षण** - गतिविधि आधारित शिक्षण पठन को जीवंत और रोचक बनाता है। जब बच्चे केवल पाठ पढ़ने के बजाय उससे जुड़ी गतिविधियों में भाग लेते हैं तो उनका भाषा और पठन कौशल स्वाभाविक रूप से विकसित होता है। कहानी लेखन, चित्र वर्णन, समूह चर्चा, संवाद लेखन, भूमिका अभिनय, शब्द खेल और अनुच्छेद निर्माण जैसी गतिविधियाँ बच्चों में रुचि उत्पन्न करती हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से बच्चे पढ़े गए पाठ को समझते हैं, उस पर विचार करते हैं और अपने अनुभवों के आधार पर अभिव्यक्ति करते हैं। इससे बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ता है और वे सक्रिय पाठक के रूप में विकसित होते हैं।
2. **संदर्भ आधारित और अनुभवपरक भाषा** - पठन शिक्षण तभी प्रभावी बनता है जब पाठ बच्चों के जीवन से जुड़ा हो। यदि पाठ में ऐसे विषय शामिल हों जो बच्चों के दैनिक अनुभवों से संबंधित हों; जैसे- गाँव, विद्यालय, परिवार, खेल, त्योहार, मित्रता या समस्या समाधान तो बच्चे उसे आसानी से समझ पाते हैं। संदर्भ आधारित सामग्री बच्चों को पढ़ने के दौरान अपने अनुभवों को जोड़ने का अवसर देती है। जब बच्चा पाठ को अपनी दुनिया से जोड़ पाता है तो उसकी समझ गहरी होती है और वह अधिक रुचि के साथ पढ़ता है। अनुभवपरक भाषा बच्चों को पठन के प्रति प्रेरित करती है और सीखने की प्रक्रिया को अर्थपूर्ण बनाती है।
3. **चित्रों, रूपरेखाओं और ग्राफिक्स का प्रयोग** - दृश्य सामग्री पठन शिक्षण को प्रभावी बनाने का महत्वपूर्ण साधन है। चित्र, रूपरेखाएँ, चार्ट और अन्य ग्राफिक्स बच्चों की समझ को स्पष्ट करते हैं तथा पाठ में रुचि बढ़ाते हैं। प्रारंभिक कक्षाओं में चित्र आधारित पठन विशेष रूप से उपयोगी होता है; क्योंकि बच्चे चित्रों के माध्यम से अर्थ का अनुमान लगाते हैं और कहानी को समझते हैं। चित्र बच्चों की कल्पनाशक्ति को भी प्रोत्साहित करते हैं और उन्हें विचारों को जोड़ने में सहायता करते हैं। दृश्य सामग्री के उपयोग से पठन अधिक आकर्षक और संवादात्मक बनता है जिससे बच्चों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित होती है।
4. **उच्च सोच कौशल आधारित प्रश्न** - प्रभावी पठन शिक्षण के लिए आवश्यक है कि बच्चों से ऐसे प्रश्न पूछे जाएँ जो उन्हें केवल पाठ को याद करने तक सीमित न रखें; बल्कि सोचने और विश्लेषण करने के लिए प्रेरित करें। "आपको क्या लगता है?", "यदि आप उस पात्र की जगह होते तो क्या करते?", "इस पाठ से आपको क्या सीख मिलती है?" जैसे प्रश्न बच्चों में आलोचनात्मक सोच विकसित करते हैं। इस प्रकार के प्रश्न बच्चों को पाठ के अर्थ को गहराई से समझने और अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर देते हैं। उच्च सोच कौशल आधारित प्रश्न बच्चों को सक्रिय और चिंतनशील पाठक बनने की दिशा में प्रेरित करते हैं।
5. **मूल्यपरक, संवादात्मक और आलोचनात्मक लेखन** - पठन शिक्षण का उद्देश्य केवल पढ़ना सिखाना नहीं; बल्कि बच्चों में मूल्यपरक और संवादात्मक दृष्टिकोण विकसित करना भी है। इसलिए बच्चों को ऐसे अभ्यास दिए जाने चाहिए जो उन्हें निर्णय लेने, दूसरों के दृष्टिकोण को समझने और अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने के लिए प्रेरित करें। उदाहरण के लिए किसी कहानी के पात्र के निर्णय पर चर्चा करना, वैकल्पिक अंत लिखना या किसी समस्या का समाधान सुझाना बच्चों में आलोचनात्मक सोच और मूल्यबोध विकसित करता है। इस प्रकार का लेखन बच्चों को संवेदनशील, विचारशील और जिम्मेदार पाठक बनने में सहायता करता है।

इस प्रकार प्रभावी पठन शिक्षण के लिए गतिविधि आधारित शिक्षण, संदर्भ आधारित भाषा, दृश्य सामग्री का प्रयोग, उच्च सोच कौशल आधारित प्रश्न और मूल्यपरक संवादात्मक लेखन जैसे घटकों का समावेश आवश्यक है। साथ ही शिक्षक और पाठ्यपुस्तक लेखक अर्थात् सामग्री निर्माताओं का सक्रिय और सजग योगदान भी अनिवार्य है। जब पाठ्यपुस्तकें सोचने को प्रेरित करें, शिक्षण प्रक्रिया संवादात्मक हो और पठन केवल शब्दों के अर्थ तक सीमित न रहकर विचारों और दृष्टिकोणों के निर्माण का माध्यम बने, तभी शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य पूर्ण हो सकता है। पठन को एक जीवंत, संवेदनशील और रचनात्मक प्रक्रिया के रूप में देखने से प्रत्येक बच्चा अपने अनुभवों के साथ सीखने में सहभागी बनता है और धीरे-धीरे आत्मनिर्भर तथा आजीवन सीखने वाला पाठक विकसित होता है।

निष्कर्ष :

उपरोक्त विवेचना के आधार पर निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि पठन विकास शिक्षा की प्रक्रिया में वह आधारस्तंभ है जो विद्यार्थी को सूचना ग्रहण करने से आगे बढ़ाकर ज्ञान, विवेक, तर्क और सृजन तक ले जाता है। यह केवल भाषा का उपकरण नहीं है; अपितु यह सोचने, समझने, प्रश्न करने और आत्म-अभिव्यक्ति की क्षमता का माध्यम भी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 (NCFSE 2023) ने इस सच्चाई को स्वीकार करते हुए पठन को विद्यालयी शिक्षा के केंद्र में रखा है। विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 द्वारा अपनाए गए पठन के छह चरणों के दृष्टिकोण से यह स्पष्ट होता है कि पठन एक क्रमिक और गहराई से विकसित होने वाली प्रक्रिया है। यह पूर्व-पठन की मौखिक संवेदनशीलता से शुरू होकर दृष्टिकोण के निर्माण और पुनर्निर्माण तक पहुँचती है। प्रत्येक चरण में विद्यार्थियों की मानसिक, भाषिक, सामाजिक और बौद्धिक जरूरतों को ध्यान में रखते हुए शिक्षण विधियों और सामग्री का चयन किया जाना चाहिए। पठन विकास की इस प्रक्रिया में शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्हें यह समझना आवश्यक है कि प्रत्येक विद्यार्थी एक विशेष चरण में होता है और उसके लिए उपयुक्त सहायता, गतिविधियाँ और पाठ्यवस्तु दी जानी चाहिए। साथ ही, पाठ्यपुस्तक निर्माताओं और शिक्षा-नीतिकारों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि शिक्षण सामग्री विद्यार्थियों की पठन क्षमता के अनुरूप और रुचिकर हो। आज के बदलते सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य में जहाँ सूचनाओं का तीव्र प्रवाह है और विचारों की विविधता बढ़ रही है वहाँ एक सजग, विश्लेषणात्मक और रचनात्मक पाठक ही लोकतांत्रिक, मूल्यनिष्ठ और संवेदनशील नागरिक बन सकता है। पठन विकास इसी दिशा में शिक्षा को सक्षम बनाता है। इसलिए यह आवश्यक है कि विद्यालयी शिक्षा में पठन को केवल भाषा विषय तक सीमित न रखा जाए; अपितु इसे समग्र शिक्षा दृष्टि का केंद्र बनाया जाए जहाँ हर बच्चा न केवल पढ़ सके; बल्कि पढ़कर सोच सके, समझ सके और नया रच सके।

ग्रंथ सूची / संदर्भ :

1. भारत सरकार. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली: मानव संसाधन विकास मंत्रालय।
2. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. (2023). विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 (NCFSE 2023). नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद।
3. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. (2021). प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा हेतु दिशा-निर्देश. नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद।
4. पाण्डेय, रमेश. (2018). भाषा शिक्षण में पठन कौशल का विकास. वाराणसी: शिक्षा भारती प्रकाशन।
5. यादव, नरेश कुमार. (2011). हिंदी शिक्षण: सिद्धांत एवं व्यवहार. दिल्ली: आरोही पब्लिकेशन।
6. मिश्रा, संजय. (2017). शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में भाषा की भूमिका. पटना: ज्ञानदीप पब्लिकेशन।